# प्रसाद के कथा साहित्य में ''ऐन्द्रिय–आनन्द''

**अरविन्द कुमार सिंह***

किसी भी ज्ञानेन्द्रिय का उसकी वासना से संबन्ध स्थापित होने पर अनुकूल (सुखद) प्रतीत होती है, उसे ऐन्द्रिय आनन्द कहा जाता है। किसी की सुन्दर, स्वस्थ और सुखी सुकुमार काया एवं उसके अंग प्रत्यंगों को देखकर किसी की जो इन्द्रिय अपनी वासना की दृष्टि की अभिलाषा करेगी वासना पूर्ति के बाद मिलने वाली सुखद अनुभूति उसी इन्द्रिय से सम्बन्धित होगी।

प्रसाद के कथा साहित्य में प्रायः सभी पात्र प्रेम के आरम्भिक चरण में ऐन्द्रिय वासना की तृप्ति का प्रयास और तज्जन्य आनन्द की अनुभूति करते दिखायी देते हैं। वे सुन्दर रूप के दर्शन के आनन्द में सदैव मग्न रहना चाहते है। कुछ ऐसे पात्रों की भी सृष्टि उनके कथा साहित्य में हुई है जो रूपान्धता के कारण अधोगति का प्राप्त होते हैं। कई रूपान्ध प्रेमी पतंगे रूपगर्विताओं की रूपसज्जा में पड़कर भस्म होते हुए वहाँ दिखाये गये हैं किन्तु इस अर्पण में भी उन्हें एक प्रकार का ऐन्द्रिय सुख अन्त तक मिलता रहता है। ऐन्द्रिय आनन्द का लोभ उन्हें इस स्थिति तक पहुँचने को विवश करता रहा। ऐन्द्रिय आनन्द वहीं तक श्रेयस्कर और वरेण्य होता है, जहाँ तक वह आत्मिक आनन्द की विकास–यात्रा के लिए प्रगति–सोपान का काम करता है।

**प्रसाद के कथा**– साहित्य के पात्र रूप– सौन्दर्य पर आकर्षित होकर उसको पाने की सुखद–कल्पना में व्यग्र होते हैं। वे जहाँ सुदर प्रिय की वर्णदीप्ति को नेत्रों से पी जाना चाहते हैं, वहीं उसके कला–मधुर आलाप की मादक–मदिरा को कानो के द्वारा छक कर पी जाना चाहते हैं। इसी प्रकार वे स्पर्श के आकर्षण से पूर्ण एवं जड़ में भी स्फूर्ति उत्पन्न करने वाले प्रिय को यदि आलिंगनबद्ध करने को आतुर दिखाई देते हैं तो

***शोध छात्र हिन्दी गाँधी शताब्दी स्मारक पी. जी. कॉलेज कोएलसा आज़मगढ़**



उसके अधर सुधारस के पान के लिए निरंतर लालायित भी रहते हैं।

इनसे सम्बन्धित सुख की कल्पना और प्रत्यक्ष ऐन्द्रिय आनन्द की प्राप्ति उन्हें न तो प्रणय–पंथ की यात्रा में थकने देती है और न ही जीवन के रस स्रोत को सूखने देती है। उनके पात्र लम्बे दुःखपूर्ण जीवन की अपेक्षा सुख के एक पल को अधिक सार्थक मानते हैं, क्योंकि वे यह जानते हैं कि इन सुख क्षणों की प्रतीक्षा में शेष दिन काटे जा सकते हैं।

**ऐन्द्रिय आनन्द के विविध स्तर–**

प्रसाद के कथा–साहित्य में ऐन्द्रिय आनन्द के अनेक स्तर देखने को मिलते है। लेखक ने अपने आनन्द विषयक धारणाओं को अपने कथा–साहित्य के पात्रों के माध्यम से कहीं–कहीं तो प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त और उनके स्थलों पर परोक्ष रूप से व्यंजित किया है। लेखक की दृष्टि से व्यक्ति मुख्यतः निमग्न ऐन्द्रिय आनन्द–सोपानों को पार करता हुआ आत्मिक आनन्द के उच्च शिखर तक की यात्रा पूरी करता है।

**(क) काल्पनिक स्तर का सोपान–**

यह ऐन्द्रिय आनन्द का प्रथम किन्तु अति महत्वपूर्ण स्तर है प्रत्येक मानव अपने पूर्व जन्म के संचित संस्कारों की प्रेरणा से नाना प्रकार की सुन्दर और रंगीली कल्पनाओं द्वारा ऐन्द्रिय भागों की तृप्ति का आनन्द प्रायः प्राप्त करता रहता है। प्रसाद की कहानी आकाशदीप का 'बुद्ध गुप्त' इसी प्रकार के आनन्द की कल्पना करके 'चम्पा' से मातृभूमि लौटने का आग्रह करता है। व्यक्ति अपनी कल्पना में जिस व्यक्ति पर –उसके सौन्दर्य –प्रेम आदि पर समर्पित हो जाता है वह उससे किसी भी परिस्थिति में अलग नहीं हानो चाहता। 'जनमेजय का नागयज्ञ' में उनका कहना है– ''रमणी का अनुराग कोमल होने पर भी अत्यंत दृढ़ होता है, वह सहज में छिन्न नहीं होता, जब वह एक बार किसी पर मरती है, जब उसी के पीछे मिटती है।''[1]

**(ख) इच्छामय स्तर या सोपान–**

भौतिक संसार में जीवित रहने वाला प्रत्येक मानव जन्मांतर के संस्कारों से प्रेरित होकर जिस किसी भी अदृष्ट या दृष्ट व्यक्ति के सौन्दर्य और तज्जन्य आनन्द की

कल्पना में अनुरक्त रहता है 'उसे प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त करने की इच्छा भी करता है।' इस इच्छा का आनन्द कम तृप्तिकर नहीं होता । यह इच्छा धीरे–धीरे जब अधिक बलवती हो उठती है तो व्यक्ति उससे विवश हो उसकी पूर्ति का प्रयत्न पूर्ण मनोयोग से करने लगता है। प्रसाद के ध्रुवस्वामिनी नाटक की नायिका ध्रुवस्वामिनी के मन में चन्द्रगुप्त को प्राप्त करने की इच्छा का जो आन्छ –सागर उमड़ रहा होता है वही घुटनशील वातावरण में भी उसे शक्ति और सॅबल प्रदान करता है। पुरस्कार कहानी का अरुण मधुलिका को प्राप्त करने की इच्छाजन्य आनन्द के कारण ही अपने साहसिक अभियान में तत्पर होता है।

**(ग) आशामय स्तर या सोपान–**

व्यक्ति अपनी जिस काल्पनिक प्रिय व सुखकर वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा करता है उसकी प्राप्ति की प्रत्याशा के आनन्द में वह दीर्घकालिक कष्टमय जीवन को भी सहजता से बिता देता है। प्रसाद का इस विषय में स्पष्ट मत है कि–''एक लम्बे दुःखपूर्ण जीवन की अपेक्षा सुख का एक पल अधिक सार्थक है, क्योंकि इन क्षणों की प्रतीक्षा में शेष दिन काटे जा सकते हैं।'' इच्छित वस्तु की प्राप्ति की इच्छा में जो आनन्द मिलता है वह व्यक्ति को प्रवृत्तमार्गी बनाये रखता है।

**(घ) प्रयत्नमय आनन्द–**

वांछित वस्तु को प्राप्त करने के लिए जब व्यक्ति प्रयत्न आरम्भ करता है तो उस समय भी एक प्रकार के आनन्द का अनुभव होता है। आचार्य शुक्ल ने इसे– ''साधनावस्था का आनन्द'' कह कर सम्बोधित किया है। प्रसाद के कथा–साहित्य में आनन्द का यह स्तर प्रमुखता से प्रकट हुआ है।

तितली की बन्जो (तितली) कुछ उत्कृष्ट बालकों को पढ़ाती व पालती–पोषती हुई अपनी दरिद्रता में भी सुख का अनुभव करती है, उसका प्रयत्नजन्य आनन्द उससे स्पष्ट शब्दों में कहलावा देता है कि ''मैं नहीं चाहती हूँ कि कोई मुझ से प्यार करे।''[2]

**(ङ) प्राप्तिमय स्तर या सोपान–**

प्रयत्न के पश्चात जब उद्देश्य की पूर्ति हो जाती है तो उसे समय जिस आनन्द की प्राप्ति होती है उसे आचार्य शुक्ल ने सिद्धावस्था का आनन्द मान दिया।



प्रसाद के कथा साहित्य के सभी प्रमुख पात्र इस आनन्द के लिए अग्रसर होते हुए दिखाई देते हैं। चन्द्रगुप्त का चाणक्य उद्देश्य पुर्ति के पश्चात् ऐसे ही शान्तिमय आनन्द की खोत में निकल पड़ता है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची–**

1. ''जनमेजय का नागयज्ञ''.....जयशंकर प्रसाद पृष्ठ सं. 66

2. ''तितली'' .....जयशंकर प्रसाद पृष्ठ सं. 243